Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

ख्याल गायन में रचित आध्यात्मिक बंदिशों का महत्व

ANMOL SACHDEVA
Research Scholar, Department of Performing Arts Banasthali Vidyapith, Banasthali, Rajasthan

DR. SANTOSH KUMAR PATHAK
Associate Professor, Department of Performing Arts Banasthali Vidyapith, Banasthali Rajasthan

शोध-सार *: संगीत और अध्यात्म में घनिष्ठ सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध प्राचीन काल में सामगान के समय स्थापित हुआ और वर्तमान समय में भी अपनी दृढ़ता बनाये हुए है। संगीत और अध्यात्म का यह सहसंबंध संगीत की प्रत्येक गायन शैली में विद्यमान है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ख़याल गायन विधा में विभिन्न विषयों से संबंधित बंदिशों का निर्माण हुआ है। इन बंदिशों में 'अध्यात्मिक बंदिशों' का एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह संगीत कला को अध्यात्म से जोड़ती हैं। अध्यात्मिक बंदिशें इस प्रकार की बंदिशें हैं जिनका साहित्य ईश्वर भक्ति, विभिन्न देवी-देवताओं का वर्णन, गुरु की महिमा इत्यादि विषयों से संबंधित है। अध्यात्मिक बंदिशें न केवल ईश्वर भक्ति का सशक्त माध्यम हैं अपितु यह संगीत कला की संरक्षक भी हैं क्योंकि अध्यात्म के अभाव में कोई भी कला उत्कृष्टता प्राप्त नहीं कर सकती। अध्यात्मिक बंदिशों में विभिन्न देवी-देवताओं के पूजन अर्चन से संबंधित बंदिशें भी संकलित हैं जो कि हिन्दू धर्म और संस्कृति की परिचायक हैं। इसके अलावा यह मनुष्य के भीतर सद्गुणों का निर्माण करने में भी सहायक हैं।*

मुख्य शब्द :- *बंदिश, अध्यात्म, ख़याल गायन, शास्त्रीय संगीत*

भूमिका

संगीत और अध्यात्म आत्मा से जुड़े विषय हैं। क्योंकि आत्मा का संबंध भावों से है और भाव ही दोनों क्रियाओं का आधार है इसलिए दोनों का अटूट संबंध है। जिस प्रकार संगीत अपनी स्वर लहरियों से हृदय के अंतस्तल में प्रवेश करता है और भावनात्मक स्तर पर मनुष्य को सुख प्रदान करता है, उसी प्रकार आध्यात्मिकता में ईश्वर के प्रति जागृत हुए करुणामयी एवं भक्तिपरक भावों से मनुष्य को एक विशेष प्रकार का आत्मिक आनंद प्राप्त होता है। भावों के अभाव में न तो संगीत अपना वांछित प्रभाव उत्पन्न कर सकता है और न ही आध्यात्मिकता अपने चरम सीमा तक पहुँच सकती है। यदि हम यह कहें कि संगीत भावों को प्रदर्शित करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है तो इसमें कोई अतिश्योक्ति न होगी क्योंकि संगीत का प्रभाव जड़ और चेतन दोनों पर होता है। साथ ही साथ यह जान लेना भी महत्वपूर्ण है कि संगीत मनुष्य मन के सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों को भी प्रदर्शित करने का सामर्थ्य रखता है जो कि किसी अन्य कला द्वारा सहज रूप से संभव नहीं। क्योंकि भक्ति का आधार ही 'भाव' है इसलिए अध्यात्म में संगीत का एक विशिष्ट स्थान है। स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद् भागवत गीता में कहा है कि

"नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदये न च |

मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ||

अर्थात हे नारद! मैं न तो बैकुंठ में ही रहता हूँ और न ही योगियों के हृदय में ही रहता हूँ। मैं तो वहीं रहता हूँ, जहाँ प्रेमाकुल होकर मेरे भक्त मेरे नाम का कीर्तन किया करते हैं। प्रस्तुत श्लोक से यह स्पष्ट होता है की संगीत और अध्यात्म का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है।[1]

संगीत का इतिहास मानव इतिहास जितना ही प्राचीन है। संगीत के इतिहास में लोक रुची के अनुसार समय-समय पर विभिन्न गायन शैलियों का जन्म हुआ है, जैसे प्रबंध, ध्रुपद, ख़याल, ठुमरी, टप्पा इत्यादि। यदि हम बाद करें वर्तमान समय कि तो वर्तमान समय में ख़याल गायन शैली हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक प्रचलित गायन शैली है। ख़याल गायन मध्य काल में प्रचार में आया। ऐसा कहा जाता है कि ख़याल गायन का आविष्कार अमीर ख़ुसरो ने कव्वाली के आधार पर किया लेकिन एक अन्य मत के अनुसार ख्याल गायन का आविष्कारक सुलतान हुसैन शर्की को माना जाता है। जो भी हो, यह निश्चित है कि ख़याल गायन शैली मध्यकाल में प्रचार में आई। 18वीं शताब्दी में ख़याल गायन को मुहम्मद शाह रंगीले के दो दरबारी गवैये सदारंग और अदारंग ने खूब प्रचारित प्रसारित किया। सदारंग और अदारंग ने ख़याल गायन में अनेक बंदिशों की रचना की।

1 https://asuriks.blogspot.com/2019/11/blog-post_75.html

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

बंदिश रचना के अंतर्गत न केवल राग का अपितु शब्दों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। प्रसिद्ध ख़याल गायक पंडित राजन मिश्र जी का कहना है कि "बंदिश में प्रयुक्त साहित्य ही बंदिश के भाव को निर्धारित करता है।" शब्दों के अभाव में गायन, गायन न रहकर वादन हो जाता है। इसलिए कंठ संगीत में शब्दों का स्थान राग के जितना ही महत्वपूर्ण है। ख़याल गायन में भिन्न-भिन्न विषयों पर अनेक रचनाएँ हुई हैं जैसे नायक नायिका के प्रेम सम्बन्धी, संयोग विषयक, वियोग विषयक, लक्षण गीत इत्यादि।

इन विभिन्न विषयक बंदिशों में 'अध्यात्मिक बंदिशों' का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। अध्यात्मिक बंदिशों से भाव ऐसी बंदिशें जिसमें ईश्वर का गुणगान हो, ईश्वर के प्रति करुणामयी भाव हों, याचक की प्रार्थना हो, विभिन्न देवी देवताओं का वर्णन इत्यादि। इस प्रकार की बंदिशों का क्या महत्व है, इसपर निम्नलिखित विभिन्न पहलुओं के माध्यम से प्रकाश डाला गया है :-

1. ईश्वर भक्ति का सशक्त माध्यम

भक्ति शब्द की व्युत्पत्ति 'भज्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'सेवा करना' या 'भजना'।[1] भक्ति का तात्पर्य है-स्वयं के अंतस को ईश्वर के साथ जोड़ देना। जुड़ने की प्रवृत्ति ही भक्ति है।[2] अध्यात्मिक बंदिशें ईश्वर भक्ति का एक सशक्त माध्यम हैं। गायक बंदिश में प्रयुक्त शब्दों के माध्यम से ही अपने हृदय के भावों को प्रकट करता है कि वह क्या कहना चाहता है। जब एक गायक किसी अध्यात्मिक बंदिश का गायन करते समय स्वयं को ईश्वर के चरणों में अर्पित कर देता है तो उस गायन में व्यतीत हुआ उसका प्रत्येक क्षण भक्ति कहलाता है। भक्ति वास्तव में भाव आधारित क्रिया है जो किसी भी कला एवं किया के माध्यम से की जा सकती है। अंतर केवल इतना है कि एक पुजारी अपनी भक्ति अपनी पूजा के माध्यम से करता है, वहीं एक गायक अपनी भक्ति अपने संगीत के माध्यम से करता है। उदाहरण के लिए राग तोड़ी की एक बंदिश:

स्थायी :- कृपा मोपे कीजे राम,
तुम जग के कृपा निधान।

अंतरा :- शरण तेरी आज दाता
दर्श मोहे दीजे राम,
भव से पार मोको कीजे।।

प्रस्तुत बंदिश में याचक अपने ईश्वर, अपने राम से यह प्रार्थना कर रहा है कि "हे राम! मुझ पर कृपा करो। तुम इस सम्पूर्ण सृष्टि के पालनहार हो, तुम सब पर अपनी कृपा करते हो। मैं आज तुम्हारी शरण में आया हूँ; मुझे अपने दर्शन दो और इस संसार रूपी भवसागर से पार करो।" इस प्रकार अनेक रागों में भक्ति विषयक रचनाएँ हुई हैं जो कि ईश्वर भक्ति का सशक्त माध्यम हैं।

2. संगीत कला के स्तर को बनाये रखने एवं उत्कृष्टता प्रदान करने में योगदान

किसी भी कला का प्रमुख उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति होता है। अर्थात जब कोई कलाकार अपनी कला की साधना करते हुए स्वयं के अस्तित्व को भूल कर अपनी साधना में विलीन हो जाता है तो वहीं से उसकी अध्यात्मिक यात्रा प्रारंभ होती है, जो कि ईश्वर प्राप्ति की ओर प्रथम चरण है। इस साधना से वह न केवल वह स्वयं का उद्धार करता है अपितु उस कला को भी सजीवता एवं उत्कृष्टता प्रदान करता है जिसकी वह साधना करता है। और अध्यात्मिक बंदिशें तो स्वयं ही ईश्वर भक्ति से संबंधित हैं इसलिए, यह कहा जा सकता है कि संगीत कला के स्तर को स्थिरता प्रदान करने में अध्यात्मिक बंदिशों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है।

संगीत कला के स्तर को बनाये रखने में अध्यात्मिक बंदिशों का एक महत्वपूर्ण योगदान यह भी है कि इस प्रकार की बंदिशों ने न केवल विलासिता से भरी श्रृंगारिक बंदिशों के प्रभाव को कम किया है अपितु संगीत कला को सास-ननद, बैरी कोयलिया इत्यादि शब्दों से भी

1 https://hi.wikipedia.org/wiki/भक्ति
2 https://www.jagran.com/spiritual/religion-whats-devotion-11850219.html

मुक्ति प्रदान की है। वर्तमान समय के प्रसिद्ध ख़याल गायक पंडित अजय चक्रवर्ती जी का कहना है कि "संगीत के प्रारंभिक विद्यार्थियों को शुरुआत में अच्छे शब्दों अथवा काव्य में रचित बंदिशें सिखाई जानी चाहिए क्योंकि 'बैरी कोयलिया', 'सास-ननद मोरी जन्म की बैरन' इत्यादि शब्दों का विद्यार्थियों पर गलत प्रभाव पड़ता है।"

भारतीय शास्त्रीय संगीत प्राचीन काल से ही आध्यात्मिकता का पुट लिए हुए है। इसके साक्ष्य हमें सामगान से प्राप्त होते हैं। सामगान में मुख्य रूप से यज्ञ कर्मकांड और विभिन्न अवसरों पर गए जाने वाले मंत्रों इत्यादि का उच्चारण किया जाता था। सर्वप्रथम सामगान एक स्वर में गाया जाता था, जिसे 'आर्चिक' गान कहा जाता था। इसके पश्चात दो स्वरों के गान को 'गाथिक' गान और जब तीन स्वरों का प्रयोग प्रारंभ हुआ तो इसे 'सामगान' कहा गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीन काल से ही हमारा संगीत आध्यात्मिकता से जुड़ा हुआ है, जिसके कारण यह अपनी उत्कृष्टता बनाए हुए है और आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत को पूरे विश्व भर में सुना जाता है और सराहा जाता है।

3. हिन्दू धर्म, देवी-देवताओं एवं संस्कृति की परिचायक

हिंदू धर्म पूरे विश्व भर में सबसे प्राचीन धर्म माना गया है। इसे 'वैदिक सनातन वर्णाश्रम धर्म' भी कहते हैं जिसका अर्थ है कि इसकी उत्पत्ति मानव की उत्पत्ति से भी पहले से है।[1] भारत संतों, देव-देवियों और पीर-पैगम्बरों की भूमि है। यहाँ समय-समय पर अनेक संतों, पीरों-पैगम्बरों और देवी-देवताओं ने जन्म लेकर भारतीय संस्कृति एवं धर्म की रक्षा की है। परिणामस्वरूप उनकी प्रशंसा में अनेक रचनाकारों ने आभार स्वरूप अनेक भजनों, कविताओं, गीतों और बंदिशों इत्यादि की रचना की। इसका प्रभाव ख़याल गायन पर भी पड़ा। ख़याल गायन में ऐसी अनेक बंदिशों का निर्माण हुआ जो विभिन्न संतों, पीरों और देवी-देवताओं से संबंधित हैं। राग दुर्गा में रचित एक और बंदिश का उदाहरण देखिये:-

स्थायी :- ऐ मोरी दुर्गा माई,
दर्शन दीजो अपने भगतन को।
अंतरा :- प्रेम दास कहे सुनो मोरी दुर्गा,
दीजो दरस आज सबनन को।।

प्रस्तुत बंदिश में माँ दुर्गा का वर्णन है जो कि हिन्दू धर्म की प्रमुख देवी मानी जाती हैं। इन्हें माता, देवी, नवदुर्गा, देवी, शक्ति इत्यादि नामों से भी जाना जाता है। प्रस्तुत बंदिश में एक भक्त माँ दुर्गा से प्रार्थना कर रहा है कि "हे माँ तू अपने भक्तों को दर्शन दें।" राग भूपाली में रचित एक बंदिश का उदाहरण देखिये:-

स्थायी :- महादेव देव महेश्वर,
त्रिशूल धरण त्रिपुरण चक्र गणेश
तिन के जग वंदन।
अंतरा :- पांच देव पंचानन पूजत,
अबीर कपूर अनुवादी निर्मल
बेल पत्र सों चन्दन कमला पती कर।।

प्रस्तुत बंदिश में भगवन शिव का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इस बंदिश में भगवन शिव के पुत्र श्री गणेश जी का भी वर्णन है। इस प्रकार ऐसी अनेक बंदिशें हैं जिसमें हिन्दू देवी-देवताओं का वर्णन प्राप्त होता है।

1 https://hi.wikipedia.org/wiki/हिन्दू_धर्म#:~:text=हिन्दू%20धर्म%20(संस्कृत:%20हिन्दू%20धर्म,से%20भी%20पहले%20से%20है।

4. मनुष्य मात्र में सद्गुणों का निर्माण करने में सहायक

रचनाकार जब किसी बंदिश की रचना करता है तो वह न केवल राग के स्वरूप को ध्यान में रखता है, बल्कि बंदिश में ताल कौन सी प्रयोग होगी, ताल की लय क्या रहेगी, बंदिश के शब्द क्या होंगे इत्यादि विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रख कर ही रचना करता है। बंदिशें राग के स्वरूप निर्धारण में तो सहायक हैं ही सही परंतु इसके अलावा इनके कई और महत्व भी इनके साथ निहित हैं जैसे कि बंदिश में प्रयुक्त शब्द। बंदिश में शब्दों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि ख़याल गायन में अधिकतर बंदिशें श्रृंगार विषयक हैं या यूँ कहें कि अध्यात्मिक बंदिशों का निर्माण अन्य बंदिशों की अपेक्षा कम हुआ है। यद्यपि प्रत्येक बंदिश का अपना महत्व है तथापि ऐसी बंदिशों का संगीत में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है जो मानुष के भीतर सद्गुणों का निर्माण करती हैं क्योंकि मनुष्य के भीतर यह स्वाभाविक गुण है कि वह जैसा देखता या सुनता है वैसा ही करने का प्रयास करता है। अध्यात्मिक बंदिशों के अंतर्गत अनेक प्रकार की बंदिशों का निर्माण हुआ है जो मनुष्य के भीतर विभिन्न गुणों के विकास में सहायक हैं। यह भक्तिपरक होने के साथ-साथ मनुष्य को अच्छी शिक्षा भी प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए राग मरवा की एक प्रचलित बंदिश:

स्थायी :- गुरु बिन ज्ञान न पावे,
मन मूरख सोच-सोच काहे पछतावे।
अंतरा :- सद्गुरु की संगत कर ले रे ज्ञानी,
तब गुनियन में गुनी कहावे।।

प्रस्तुत बंदिश में गुरु के महत्व को दर्शाया गया है और इस बात की ओर संकेत किया गया है कि मनुष्य को गुरु के बिना मनुष्य को ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरु की शरण में जाना चाहिए, व्यर्थ में पछताने का कोई लाभ नहीं।

निष्कर्ष

अध्यात्म का सम्बन्ध प्रत्येक कला से है। संगीत में यह सम्बन्ध स्वर एवं शब्दों के माध्यम से प्रकट होता है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ख़याल गायन विधा में रचित विभिन्न विषयक बंदिशों में 'अध्यात्मिक' बंदिशों का एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि अध्यात्मिक बंदिशें ईश्वर भक्ति का एक प्रभावी माध्यम हैं, यह हिन्दू धर्म और संस्कृति की परिचायक हैं, यह मनुष्य में विभिन्न सद्गुणों का निर्माण करती हैं और संगीत कला के स्तर को स्थिरता प्रदान करती हैं।

सन्दर्भ

ठाकुर, ओंकारनाथ. (2018). संगीतांजलि. वाराणसी: पिलग्रिम पब्लीकेशन.
जयदेव सिंह, ठाकुर. (2016). भारतीय संगीत का इतिहास. जयपुर: विश्वविद्यालय प्रकाशन.
झा, रामाश्रय. (2022). अभिनव गीतांजलि. अलाहबाद: संगीत सदन प्रकाशन.
नारायण गर्ग, लक्ष्मी. (2022). निबंध संगीत. हाथरस: संगीत कार्यालय.
वसंत. (2017). संगीत विशारद. हाथरस: संगीत कार्यालय.
भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. हाथरस: संगीत कार्यालय.